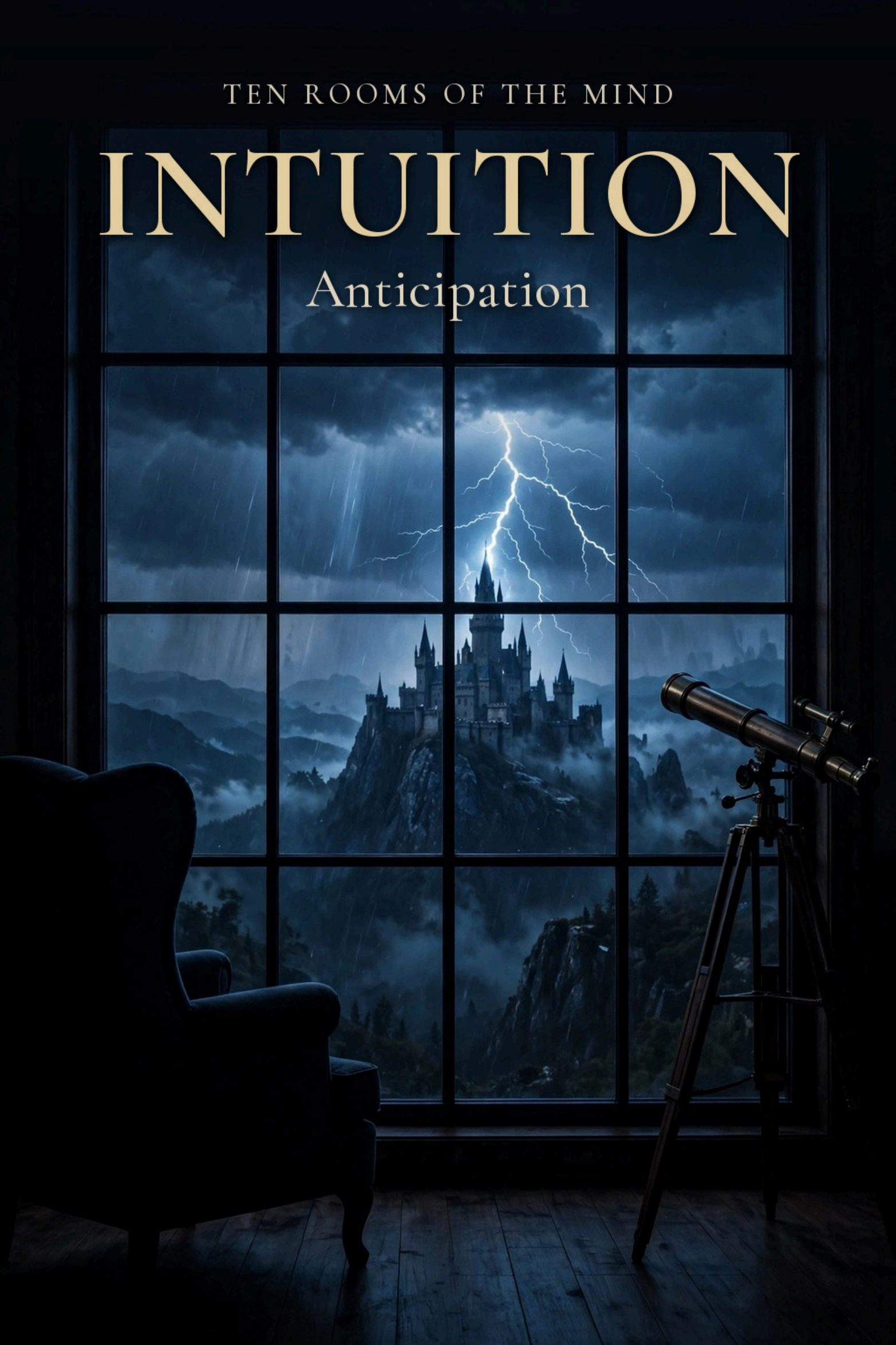
TEN ROOMS OF THE MIND

INTUITION

Anticipation



जिलेट अंतर्ज्ञान

पहले भाँप लेना

मन के दस कमरे

एक घर है जिसमें हममें से हर कोई रहता है, उसे कभी चुने बिना।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे उन सब जगहों से बेहतर जानते हैं जहाँ हम सचमुच कभी रहे हैं। भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ को हम हर दिन खोलते हैं, और हमें पता भी नहीं चलता।

कुछ पर हम ताला लगाए रखते हैं, यह जताते हुए कि उनका हमसे कोई वास्ता नहीं।

और फिर वे कमरे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी न जाने कैसे उन्हें अपने भीतर लिए फिरते हैं। यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई पोथी नहीं जो किसी ताक़ पर पड़ी धूल खा रही हो।

यह उस आदमी की आपबीती है जो इन दस कमरों से एक-एक करके गुज़रा, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कंधों पर कुछ और बरस लिए, उन्हें ठीक वैसा ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसा उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े।

मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से।

कुछ बेमन से।

कुछ तभी, जब लौटने के लिए बहुत देर हो चुकी थी।

अगर ये कमरे आपको जाने-पहचाने लगें, तो इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

इसलिए कि कहीं बहुत गहरे में वे आपकी कहानी भी कहते हैं।

फर्दिनांदो

अंतर्ज्ञान — पहले भाँप लेना

औरतें—जो सबसे पहली थीं, जो इकलौती थीं—मुझसे हमेशा पूछती थीं:

“तुम्हें कैसे पता चला?”

जवाब मुझे हमेशा असहज कर देता था।

क्योंकि सच यह है कि मुझे पता नहीं था।

मैंने देखा था।

एक पल के लिए।

पहाड़ के पीछे कौंधी बिजली की तरह।

अंतर्ज्ञान उस चीज़ का समय से पहले आ पहुँचना है जिसे तर्क बहुत बाद में समझेगा।

वह एक खिड़की है जो इससे पहले खुलकर बंद हो जाती है कि आप उससे बाहर झाँक सकें।

बहुत-से लोग मानते हैं कि यह एक देन है।

मुझे लगता है यह सुनने का एक ढंग है।

शायद सबसे दुर्लभ।

क्योंकि इसके लिए ख़ामोशी चाहिए, अपने भीतर भी।

दुनिया लगातार बोलती है।

लोग लगातार बोलते हैं।

ख़ामोशी भी बोलती है।

अंतर्ज्ञान तब जन्म लेता है जब हम वह सुनना सीख लेते हैं जिसे दूसरे अनसुना कर देते हैं।

लहजे में एक बदलाव।

एक नज़र जो मिली नहीं।

एक झिझक।

रंग बदलती एक मौजूदगी।

छिपने की कोशिश करता एक सच।

अंतर्ज्ञान अलौकिक को नहीं देखता।

वह उसे देखता है जो पहले से मौजूद है।

बाक़ी सबसे पहले।

इसीलिए वह अक्सर असहज करता है।

वह तब आता है जब सब अब भी उलटी बात के क़ायल होते हैं।

और जो वक़्त से बहुत पहले सही निकले, उसे कोई माफ़ नहीं करता।

मगर अंतर्ज्ञान को पूर्वाभास न समझ बैठें।

अंतर्ज्ञान हमारे साथ-साथ चलता है।

पूर्वाभास हमारे ऊपर से गुज़र जाते हैं।

एक सुनने से जन्म लेता है।

दूसरे इजाज़त माँगे बिना आ जाते हैं।

एक आपका अपना है।

दूसरा आपके भीतर से होकर गुज़र जाता है।

और अक्सर क़ाबू में नहीं आता।

फर्दिनांदो